

Chapter 9

Tradition

परंपरा

We have been discussing for several days the question of fear. We shall now consider what I think is one of our greatest difficulties—how to prevent the mind from becoming imitative.

We see there are obvious imitations—copying, learning a thing, eating in a certain way, putting on certain clothes, learning to ride a bicycle or a motor car, learning a technique, and so on. These are the superficial, the obvious imitations which are necessary, which are useful and essential. But, through tradition the mind becomes an instrument which merely functions in the groove of imitation.

Perhaps I am going to talk of something that is difficult. If you find it difficult, talk it over with your teacher. Ask them questions because it is very important to free the mind from crystallizing, from becoming dull, from merely functioning as a machine without much creative release.

It is very important to understand how the mind both creates for itself tradition and has tradition imposed upon it—through social, environmental pressures, by conditioning, patterns, barriers. The way of imitation is what we have to think about, and not how to free the mind or how the mind can free itself from its own imitative process.

For most of us, experience becomes a tradition. Do you understand what I mean by 'experience'? You see a tree; the seeing, the perception creates an experience, does it not!

हम कई दिनों से भय के प्रश्न पर चर्चा कर रहे हैं। अब हम जिस विषय पर विचार करने जा रहे हैं मुझे लगता है कि वह हमारी सबसे बड़ी कठिनाइयों में से एक है—यानी मन को अनुकरण की प्रवृत्ति से कैसे बचाया जा सकता है।

कुछ क्षेत्रों में अनुकरण साफ नज़र आता है, जैसे दूसरों की नकल करना, कुछ सीखना, खाना खाने का खास ढंग, विशिष्ट तरह की पोशाक पहनना, साइकिल या कार चलाना, कोई कौशल सीखना आदि। अनुकरण के ये रूप सतही होते हैं, अनायास सीख लिये जाते हैं, इन्हें सीखना ज़रूरी भी होता है क्योंकि वे उपयोगी और आवश्यक होते हैं। परंतु परंपरा के द्वारा मन एक ऐसा यंत्र बन जाता है जो केवल अनुकरण की परिपाठी पर ही कार्य करता है।

मैं जो कहने जा रहा हूं वह शायद कुछ कठिन है। यदि यह आपको कठिन लगता हो तो अपने शिक्षक से इस पर चर्चा कर लें। उनसे प्रश्न करें क्योंकि यह बहुत ज़रूरी है कि मन किसी भी सांचे में ढलकर जड़ न हो जाए, सृजनात्मक स्फूर्ति से रहित किसी यंत्र की तरह न हो जाए।

मन किस तरह से अपने लिए स्वयं ही कोई परिपाठी बना लेता है और इस पर सामाजिक, परिवेशगत दबावों के माध्यम से, संस्कारबद्धता, स्थापित ढांचों और अवरोधों के द्वारा किस प्रकार परंपरा को थोप दिया जाता है, यह समझना बहुत महत्त्वपूर्ण है। अनुकरण कैसे होता है इस पर हमें सोच-विचार करना होगा—न कि इस बारे में कि मन को इससे मुक्त कैसे करें या मन अपनी अनुकरण करने की प्रक्रिया से स्वयं को कैसे मुक्त कर ले।

हमें से ज़्यादातर के लिए अनुभव परंपरा का रूप ले लेता है। 'अनुभव' से मेरा क्या तात्पर्य है, आप समझ रहे हैं? आप किसी वृक्ष को देखते हैं, देखना यानी नेत्रों से किया जाने वाला संवेदन

Chapter 9

You see a car; the very seeing is the experiencing, and the experience creates a tradition. Your mind is bound by tradition, tradition being memory, and the older the people, the older the race, the more oppressive are the traditions. The mind lives in tradition, functions in tradition, acts in tradition. The mind becomes an imitative mind because it is experiencing all the time—seeing a bird, seeing a man, seeing a woman, having pain, seeing death and disease, seeing an airplane, a bullock cart, a donkey with a huge bundle on its back, an overloaded camel, or one bull charging at another. All these are experiences. And when the mind is stirred up, it creates, out of every experience, a tradition, a memory; and so the mind becomes a factor of imitation. The problem is to be really free from imitation, from the accumulation of tradition, because without that freedom there is no creativity.

Practically everybody in the world has so little freedom to live, to create, to be. I do not mean having children or writing a few poems, but the creative release of the mind in freedom from tradition, freedom from the experience which makes for tradition, freedom from memory. This is, as I said, rather difficult, but you should listen to all this as you would listen to music, as you would see the beauty of the river and the lovely trees that are old and heavy and full of shade. You should see all this as you see the beautiful pictures in a museum, the lovely statues of the Greeks and of the Egyptians. Similarly, you should listen to all this, and if you are at all serious, at all inquiring, you have to come to this freedom because an imitative mind, a traditional mind, can never be creative.

अनुभव की रचना करता है, है न? आप एक कार को देखते हैं; उसको देखा जाना ही अनुभव है और अनुभव ही किसी परंपरा का निर्माण करता है। आपका मन परंपरा से बंधा होता है क्योंकि परंपरा स्मृति है और लोग जितने अधिक वृद्ध हो जाते हैं, जाति जितनी अधिक पुरानी हो जाती है, परंपराएं उतनी ही अधिक दमनकारी हो जाती हैं। मन परंपरा में जीता है, परंपरा से बंधकर कार्य करता है, परंपरा से बंधकर आचरण करता है। मन अनुकरण करने वाला बन जाता है क्योंकि यह निरंतर अनुभव करता रहता है : किसी पक्षी को देखना, किसी पुरुष को देखना, किसी स्त्री को देखना, पीड़ा होने की अनुभूति, मृत्यु को, बीमारी को देखना, हवाई जहाज को, बैलगाड़ी को, या क्षमता से अधिक बोझ ढो रहे किसी ऊंट को, या किसी सांड़ को दूसरे पर हमला करते देखना, ये सभी अनुभव हैं। उत्तेजित मन प्रत्येक अनुभव से परंपरा का, स्मृति का निर्माण करने लगता है और इस तरह वह अनुकरण का माध्यम बन जाता है। अतः समस्या वस्तुतः अनुकरण से, परंपरा के संचय से मुक्त होने की है क्योंकि उस मुक्ति के बिना सृजनशीलता संभव नहीं है।

असल में किसी भी मनुष्य के पास जीने के लिए, सृजन के लिए, होने के लिए बहुत अधिक स्वाधीनता नहीं है। मेरा आशय बच्चों को जन्म देने या कविताएं लिखने की स्वतंत्रता से नहीं बल्कि मन की उस सृजनात्मक स्फूर्ति से है, जो परंपरा से और उस परंपरा को निर्मित करने वाले अनुभव से मुक्त हो जाने में है, स्मृति से मुक्त हो जाने में है। जैसा कि मैंने कहा, यह कुछ कठिन है परंतु आपको यह सब उसी तरह ध्यान से सुनना चाहिए जैसे आप संगीत को सुना करते हैं, जैसे आप नदी की सुंदरता को और उन पुराने छायादार वृक्षों के सौंदर्य को ध्यानपूर्वक देखते हैं। इन सबको आपको उसी प्रकार देखना होगा जैसे आप किसी संग्रहालय के सुंदर चित्रों को देखते हैं, ग्रीक एवं मिस्र की प्रतिमाओं की सुंदरता को देखते हैं। इसी तरह, आपको यह सब ध्यान देकर सुनना चाहिए और यदि आप गंभीर हैं, आपमें जिज्ञासा है तो आपको इस स्वतंत्रता के आयाम में प्रवेश करना ही होगा क्योंकि अनुकरण करने वाला मन, परंपरा से बंधा मन कभी सृजनशील नहीं हो सकता।

Chapter 9

You function in tradition because you are afraid of what people say, of what the neighbours or your parents or your guardians or your priests say. You are afraid. So you act in the old way of thinking. You are a Brahmin or something else, and you keep on being the same until you die, moving in the same circle, in the same pattern, in the same framework. That is not freedom. The mind is not then free from thought which is born of experience, of tradition, of memory; it is anchored in the past, and therefore it cannot be free.

We talk a great deal about freedom of thought. There are books written about how thought must be free. But thought can never be free. The mind is experiencing all the time, consciously or unconsciously, whether you are looking out of the window, or whether you have closed your eyes, or whether you are sleeping; it is experiencing various influences, the pressure of people, of climate, of food. Various beliefs and thoughts keep impinging on the mind; the mind keeps on accumulating, and from that accumulation, from that tradition, from the innumerable memories, it acts. To expect such a mind to be free is like telling a man who is dying to be free. A dying man can never be free, he can never see anything new because of his memories. Memory is the result of yesterday, and to see anything new, to create anything totally new, that which is anchored to the past, that which is the past, must come to an end; then only can there be freedom to think.

Of course, you must have freedom to think, but tradition, governments, party politics—these do not allow

आप परंपरा का पालन इसलिए करते हैं क्योंकि आपको भय होता है कि यदि आप उससे हटकर चलेंगे तो लोग क्या कहेंगे, पड़ौसी, आपके माता-पिता, आपके अभिभावक या पुरोहित क्या कहेंगे। आप डरते हैं, इसलिए आप पुरानी विचारधारा के अनुसार आचरण करते हैं। आप ब्राह्मण हैं या जो कुछ भी हैं, मृत्युपर्यंत वही बने रहते हैं, उसी दायरे में धूमते रहते हैं, उसी लीक पर चलते रहते हैं, उसी ढांचे के अनुसार जीते रहते हैं। यह स्वतंत्रता नहीं है। इस स्थिति में विचार—जो कि अनुभव, परंपरा और सृति की उत्पत्ति मात्र है—अतीत से जुड़ा होने के कारण मुक्त नहीं हो सकता।

हम विचार की स्वतंत्रता के बारे में बढ़-चढ़ कर बातें करते हैं। विचार की स्वतंत्रता के बारे में अनेक किताबें लिखी गयी हैं। परंतु विचार कभी मुक्त नहीं हो सकता। मन तो निरंतर हर समय कुछ-न-कुछ अनुभव करता ही रहता है, चाहे सचेतन स्तर पर हो या अचेतन स्तर पर, चाहे आप खिड़की से बाहर देख रहे हों या आपने आंखें बंद कर रखी हों या आप सो रहे हों—मन तो विभिन्न प्रभावों को, लोगों को, वातावरण के, भोजन के दबावों को अनुभव करता ही रहता है। अनेक प्रकार के विश्वास और विचार मन से टकराते ही रहते हैं। मन निरंतर संग्रह करता रहता है और उस संग्रह के माध्यम से, उस परंपरा के आधार पर, असंख्य सृतियों के सहारे यह आचरण करता है। इस प्रकार के मन से मुक्त होने की आशा करना ऐसे ही है जैसे मरणासन्न व्यक्ति से मुक्त होने के लिए कहना। मरणासन्न मनुष्य कभी मुक्त नहीं हो सकता, वह किसी नयी चीज़ को बिलकुल देख नहीं सकता, क्योंकि उसकी सृतियां उसे ऐसा नहीं करने देतीं। सृति बीते कल का परिणाम है और किसी भी नयी चीज़ को देखने के लिए—किसी सर्वथा नयी चीज़ का सृजन करने के लिए यह आवश्यक है कि जो कुछ अतीत से जुड़ा है, जो कुछ अतीत है, उसका अंत हो जाए—केवल तभी स्वतंत्र रूप से सोचना संभव है।

हाँ, आपको सोचने की स्वतंत्रता अवश्य होनी चाहिए परंतु परंपरा, सरकारें, दलीय राजनीति, ये

Chapter 9

you to think. They want you to think in a particular direction, and that thinking is a limited thing, and to break away from it and to think differently is still limited. Say, for instance, I am a Muslim, and I break away from the Muslim habits, traditions, habits of thought, and become a Christian or a Communist. Such a breaking away is still thinking; it is still the process of imitation, the process of experience, the process of memory; and to think in the new pattern of the Communist instead of the old pattern of the Muslim is still limited thinking.

So, our question is: Can the mind be free—not free from experience, but free to experience and not accumulate? To be free from experience is not possible; you might as well be dead. But can the mind, in the very experiencing, cease to create tradition? Suppose you see a nice, new, polished bicycle with chromium handles; you see the beauty of the design, you see the polish, and you are attracted; you want it, and you get it. The very getting of a cycle is an experience to you; and that experience is stamped in your mind, and you say, 'It is mine.' You polish it for a few days or weeks and then forget about it. But it has created in your mind an experience which becomes a tradition, and that tradition holds your mind; then from that you want a car, and if you have a car, you want an airplane—if you are rich enough to buy one—and so on and on, all within the field of imitation. This movement from wanting a cycle to wanting a jet plane is still in the same pattern, but this is not freedom.

Freedom comes when the mind experiences without creating tradition. Do not say, 'How is that

सभी आपको इससे रोकते हैं। वे चाहते हैं कि आप किसी विशेष ढंग से ही सोचें और इस प्रकार सोचना एक दायरे में बंधा हुआ होता है और उससे छूटना एवं किसी अन्य तरीके से सोचना भी पुनः किसी दायरे से बंध जाना होता है। मान लीजिए मैं मुसलमान हूं और मैं मुस्लिम रीति-रिवाजों को छोड़ देता हूं—उन परंपराओं को, उस विचारधारा को त्याग कर ईसाई या कम्युनिस्ट बन जाता हूं। इस प्रकार का त्याग भी विचारधारा का एक रूप है, यह भी अनुकरण का ही एक तरीका है, अनुभव की प्रक्रिया है, सृति की प्रक्रिया है। मुस्लिम प्रणाली के पुराने ढांचे के स्थान पर कम्युनिस्ट प्रणाली के नये ढांचे में ढल कर सोचना भी पुनः किसी दायरे में बंद रह कर किया जाने वाला विचार मात्र है।

अतः हमारा प्रश्न यह है : क्या मन मुक्त हो सकता है?—अनुभव से नहीं बल्कि अनुभव करने और संग्रह न करने के लिए स्वतंत्र हो सकता है? क्योंकि अनुभव से मुक्ति तो संभव ही नहीं है; उसका अर्थ तो मृत्यु है। परंतु क्या मन के लिए यह संभव है कि अनुभव से गुजरने के दौरान वह परंपरा को निर्मित न होने दे? मान लीजिए आप एक नयी सुंदर चमकदार साइकिल देखते हैं जिसमें क्रोमियम के हैंडल लगे हैं, आप उसकी बनावट की सुंदरता, उसके रंगों की चमक देखते हैं और उससे आकर्षित होते हैं, आप उसे पाना चाहते हैं और पा भी लेते हैं। साइकिल पाना ही आपके लिए एक अनुभव है। वह अनुभव आपके मन पर अंकित हो जाता है और आप कहते हैं, 'यह मेरी है'। कुछ दिनों और हफ्तों तक आप उसे झाड़ते-पोछते हैं और फिर उसे भूल जाते हैं। परंतु इसने आपके मन में एक अनुभव की रचना की जो परंपरा बन जाता है और वह परंपरा, वह अभ्यास आपके मन को जकड़ लेता है। फिर आप कार की इच्छा करने लगते हैं और यदि आपके पास कार है और बेइंतहा पैसा है तो हवाई जहाज पाने की इच्छा करते हैं। इस प्रकार यह क्रम जारी रहता है जो अनुकरण की सीमा के भीतर ही होता है। साइकिल चाहने से लेकर जेट विमान चाहने तक की यह दौड़ उसी ढांचे के भीतर होती है किंतु यह स्वतंत्रता नहीं है।

स्वतंत्रता तब होती है जब मन परंपरा की रचना किए बिना ही अनुभव करता है। यह मत कहिए,

Chapter 9

possible?’ ‘How can I do it?’ When you ask such a question, you have already created the pattern. The ‘how’ means the pattern. The ‘how’ implies the way of getting toward that pattern, and in the very process of copying the method, the mind has created tradition and has been caught in it. So, there is no ‘how’ to freedom, there is no way to freedom. But if you merely observe, see and are conscious of the way the mind experiences and creates tradition and is caught in it, if you are just aware of it and realize the process, then out of that realization comes something entirely different, a freedom which is not tethered to experience.

This is important to understand because in schools, in our education, all we are taught is the cultivation of memory, the learning of formulas; the mind is trained only in the process of imitation. When you read history, when you learn science, physics, philosophy, or psychology, the teacher is merely functioning in imitation; you learn from him, and you also imitate. So, from childhood until you die, this process of imitation, this cultivation of memory goes on. You are just living in a groove of imitation, of tradition. That is all you know, that is your culture, and so there are very few creative human beings. To drop all that, to say whether memory is essential or whether it is a detriment, a hindrance—that is the function of education. But we begin at the wrong end; we first cultivate memory and then say, ‘How am I to get to the other?’ But if the other is emphasized or talked about, seen, investigated, felt—which is real education—then the learning of some technique for some particular job becomes immaterial, though

‘यह कैसे हो सकता है?’ या ‘मैं इसे कैसे कर सकूँगा?’ जब आप इस तरह का प्रश्न पूछते हैं तो आप पहले ही ढांचा बना चुके होते हैं। ‘कैसे’ का अर्थ है कोई ढांचा। ‘कैसे’ उस ढांचे तक जाने का पर्याय है और उस तरीके के अनुकरण की प्रक्रिया में ही मन परंपरा को निर्मित कर लेता है, और उस परंपरा में फंस जाता है। इसलिए स्वतंत्रता में ‘कैसे’ का कोई स्थान नहीं है। स्वतंत्रता तक जाने के लिए कोई मार्ग नहीं होता। लेकिन यदि आप बस अवलोकन करें, देखें एवं इसके प्रति सचेत रहें कि मन किस तरह से अनुभव करता है, किस तरह से परंपराएं निर्मित कर लेता है और उसमें फंस जाता है; यदि आप उसके प्रति जागरूक भर रहें और उस प्रक्रिया का प्रत्यक्ष बोध होने दें, तो उस प्रत्यक्ष बोध से ही कोई पूर्णतः विलक्षण चीज़ सामने आती है—वह स्वतंत्रता जो किसी अनुभव के खूंटे से नहीं बंधी होती।

इसे समझना महत्त्वपूर्ण है क्योंकि हमारे स्कूलों में, हमारी शिक्षा व्यवस्था में, हमें केवल स्मृति को पोषित करना, सूत्रों को रटना भर सिखाया जाता है—मन को केवल अनुकरण करने के लिए ही प्रशिक्षित किया जाता है। जब आप इतिहास पढ़ते हैं, जब आप विज्ञान का अध्ययन करते हैं, भौतिक-शास्त्र का, दर्शनशास्त्र का अथवा मनोविज्ञान का अध्ययन करते हैं तो शिक्षक एक प्रकार से अनुकरण ही करवा रहा होता है—आप उससे सीखते हैं और आप भी अनुकरण करने लगते हैं। इसलिए बचपन से लेकर मृत्यु तक यह प्रक्रिया, स्मृति का यह पोषण चलता ही रहता है। आप बस अनुकरण की लीक पर, परंपरा की पटरी पर ही जिया करते हैं। आप बस उतना ही जानते हैं, वही आपकी संस्कृति होती है। इसलिए सृजनशील विरले ही होते हैं। उस सबसे स्वयं को मुक्त कर लेना और यह समझ लेना कि स्मृति कितनी आवश्यक है या बाधक है, हानिकारक है—यही तो शिक्षा का कार्य है। किंतु हम गलत सिरे से शुरुआत करते हैं; पहले हम स्मृति का विकास कर लेते हैं, फिर कहते हैं, ‘मैं उस दूसरे सिरे तक कैसे पहुंचूँगा?’ परंतु यदि उस दूसरे हिस्से पर ध्यान दिया जाए, उस पर विचार-विमर्श किया जाए, उसे देख लिया जाए, उसकी जांच की जाए, उसे महसूस किया जाए—जो कि वस्तुतः शिक्षा है—तो किसी खास व्यवसाय के लिए कोई कौशल सीखना गौण हो जाता है हालांकि वह भी आवश्यक होता है।

Chapter 9

necessary.

Is not the function of education primarily to free the mind from its own experiences so that there can be creative life, that creativeness which we call God or truth?

Question: Why do we hate anybody, and from where does this feeling of hatred come?

Krishnamurti: Why does one hate? Do you hate anybody? Or, is it merely an academic question, just a casual question? Do you dislike anybody? I am sure you do. First of all, you dislike some persons because they have done some harm to you; they have insulted you; they have called you names, or they have taken away your toy, or you do not like their face, or they do not smile nicely, or they are crude, vulgar, heavy. So, your natural reaction is to say, 'Do not come near me.' That is just a natural reaction, is it not? There is nothing wrong in this.

To condemn anything is the most stupid form of action. You must not condemn hatred but examine how dislike, hatred, comes into being. If you say, 'To hate is wrong, it is stupid,' then it is only your condemnation that is stupid. But if you begin to question how dislike comes into being, like a flower in sunshine, then you can do something. But if you merely condemn it and push it aside, it is still there.

You dislike for many, many reasons. It may be because of a personal reason—because you have been hurt, you have been called names, or something has been taken away from

क्या शिक्षा का कार्य मुख्यतः यही नहीं है कि मन अपने अनुभवों से मुक्त रहना सीख सके ताकि जीवन सृजनशील हो जाए, उसमें वह सृजनशीलता आ पाए जिसे हम सत्य या ईश्वर कहते हैं?

प्रश्न : हम किसी से घृणा क्यों करते हैं और हममें घृणा की भावना कहाँ से पैदा होती है?

कृष्णमूर्ति : कोई मनुष्य घृणा क्यों करता है? क्या आप किसी से घृणा करते हैं? या यह सवाल बस यूं ही कर दिया गया है? क्या आप किसी को नापसंद करते हैं? मुझे पूरा विश्वास है कि करते होंगे। पहली बात यह है कि आप कुछ लोगों को इसलिए नापसंद करते हैं क्योंकि उन्होंने आपका कुछ अहित किया होता है, उन्होंने आपका अपमान किया होता है, आपकी निंदा की होती है या आपका खिलौना चुरा लिया होता है—या फिर आपको उनका चेहरा पसंद नहीं होता, उनकी मुस्कान अच्छी नहीं लगती या वे अशिष्ट, अभद्र और कुरुप, उबाऊ होते हैं। इसलिए अपनी स्वाभाविक प्रतिक्रिया के रूप में आप कहते हैं, 'मेरे पास मत आओ'। यह बिलकुल स्वाभाविक प्रतिक्रिया होती है—है न? इसमें कुछ गलत नहीं है।

किसी चीज़ की निंदा करना सबसे मूर्खतापूर्ण काम है। आपको घृणा की निंदा नहीं, परीक्षा करनी चाहिए कि आखिर नापसंदगी या घृणा उत्पन्न क्यों होती है। यदि आप कहते हैं, 'घृणा करना गलत है, बेवकूफी है' तो आपके द्वारा की जाने वाली ऐसी निंदा ही वास्तव में मूर्खता है। किंतु यदि आप यह पूछना शुरू करें कि घृणा किस प्रकार अस्तित्व में आती है—जैसे कि सूर्य के प्रकाश में फूल खिलकर अस्तित्व में आता है—तो आप इस बारे में कुछ कर सकेंगे। लेकिन यदि आप इसे बस निंदा करते हुए ढुकरा देते हैं तो यह यथावत बनी रहती है।

आपकी नापसंदगी के बहुत से, अनेक कारण होते हैं। यह किसी व्यक्तिगत कारण से हो सकती है—चूंकि किसी ने आपको ठेस पहुंचायी है या आपसे कुछ छीन लिया गया है या आपका अपमान हुआ हो, या आप किसी के प्रति ईर्ष्या, द्वेष रखते

Chapter 9

you; or you have been humiliated, or you feel jealous, envious of another, and you hate the other. You may dislike somebody who is nice, clean, good-looking, because you are not like that; you want to be like that, but you are not. You have asked how hatred comes into being. I am trying to show you how it comes into being. You plant a tender tree; another boy comes along and pulls it out, and you dislike that boy because something which you love, which you care for, has been destroyed.

Our life, from childhood up to old age, is a constant process of envy, jealousy, hatred, and frustration, a sense of loneliness, of ugliness. But if the teacher, the parent, the educator—instead of saying hatred is right or wrong, or how to get over it, which is all a stupid way of dealing with it—takes the trouble to explain how the hatred arises and so brings about intelligence and clarity in the student, then the student will see for himself how hatred comes into being; then he will see the conflict within himself, and realize that this struggling and fighting will lead nowhere

हों और उससे घृणा करते हों। किसी भले, साफ-सुथरे, सभ्रांत व्यक्ति को आप इसलिए नापसंद कर सकते हैं, क्योंकि आप वैसे नहीं हैं—आप उस जैसा होना तो चाहते हैं, किंतु हैं नहीं। आपने पूछा है कि घृणा की यह भावना कहाँ से उत्पन्न होती है। मैं आपको यही दिखाने का प्रयास कर रहा हूँ कि यह किस प्रकार उत्पन्न होती है। आप एक नाजुक पौधा रोपते हैं, दूसरा एक लड़का आकर उसे उखाड़कर नष्ट कर देता है और आप उस लड़के को नापसंद करने लगते हैं क्योंकि जिससे आपको लगाव था, जिसकी आप फिक्र करते थे उसे नष्ट कर दिया गया।

बचपन से बुढ़ापे तक हमारा जीवन ईर्ष्या, द्वेष, घृणा और कुंठा की एक सतत प्रक्रिया होता है, अकेलेपन और कुरुपता के भाव से भरा रहता है। किंतु यदि अध्यापक, अभिभावक, शिक्षक यह कहने के बजाय कि घृणा करना ठीक है या गलत है या इस पर कैसे काबू पाएं—जो कि घृणा के प्रश्न का समना करने का एक मूर्खतापूर्ण तरीका है—यदि यह समझाने का प्रयत्न करें कि घृणा किस प्रकार पैदा होती है और इस प्रकार छात्र में प्रज्ञा और स्पष्टता को जगाएं तो छात्र स्वयं ही देख लेगा कि घृणा कैसे अस्तित्व में आती है; तब वह अपने भीतर उठने वाले दंदंद को स्वयं ही देख लेगा और वह यह समझ जाएगा कि यह संघर्ष और कलह उसे नष्ट ही करेंगे।